

आधुनिक युग में संस्कृत भाषा की उपयोगिता

Dr Sanju Garg

Lecturer in Sanskrit, Government College Behror

सार

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति परंपरा और ज्ञान का मूल स्रोत है। यह धार्मिक या शास्त्रीय ग्रंथों की भाषा है। मानव सभ्यता के वैज्ञानिक दार्शनिक भाषाई और साहित्यिक विकास में इसका योगदान अद्वितीय रहा है। यद्यपि आधुनिक युग में तकनीकी और वैश्विक भाषाओं का प्रभाव बढ़ा है तथापि संस्कृत की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। शिक्षा योग्य आयुर्वेद कंप्यूटर विज्ञान भाषाविज्ञान और वैश्विक सांस्कृतिक संवाद में इसकी उपयोगिता निरंतर बढ़ रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में संस्कृत भाषा की आधुनिक संदर्भों में उपयोगिता चुनौतियाँ और संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द संस्कृत भाषा वैज्ञानिकता आधुनिक युग सांस्कृतिक महत्व योग आयुर्वेद शिक्षा नीति कंप्यूटर विज्ञान ज्ञान परंपरा।

परिचय

संस्कृत भाषा का इतिहास और उत्पत्ति भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक के रूप में देखी जाती है। संस्कृत की उत्पत्ति वैदिक काल में हुई मानी जाती है जब ऋग्वेद की रचना की गई थी जो लगभग 1500 ईसा पूर्व का समय है। वैदिक संस्कृत जिसे ऋग्वेद में उपयोग किया गया था को संस्कृत भाषा का सबसे पुराना रूप माना जाता है। इसके बाद शास्त्रीय संस्कृत का विकास हुआ जो पाणिनि के व्याकरण ग्रंथ अष्टाध्यायी, लगभग 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व द्वारा सुव्यवस्थित और संरचित किया गया। पाणिनि का व्याकरण संस्कृत के विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था और इसने भाषा के व्याकरणिक नियमों को व्यवस्थित किया जिससे संस्कृत साहित्य का विकास हुआ। संस्कृत भाषा न केवल धार्मिक ग्रंथों की भाषा रही है बल्कि विज्ञान, खगोलशास्त्र, गणित, चिकित्सा, दर्शन और कला के विभिन्न क्षेत्रों में भी इसका व्यापक उपयोग हुआ है। इसकी शुद्ध और वैज्ञानिक संरचना के कारण संस्कृत को देवभाषा, देवताओं की भाषा भी कहा जाता है। प्राचीन समय से लेकर आज तक संस्कृत भाषा का प्रभाव भारतीय संस्कृति, धर्म और ज्ञान पर गहराई से पड़ा है और यह भाषा आज भी अपने अद्वितीय साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान के लिए प्रतिष्ठित मानी जाती है।

संस्कृत साधारण भाषा नहीं है इसको समझना होगा। ये भाषा आविष्कृत की गई थी आध्यात्मिक सिद्धांतों को दूसरे तक पहुँचाने के लिए। जो बात संस्कृत में कही गई है वो बात किसी और भाषा में कही ही नहीं जा सकती। अभी जितनी वर्तमान भाषाएँ प्रचलन में हैं उनमें संस्कृत के अगर करीब कुछ है तो हिंदी है। जो हिंदी के करीब नहीं है वो संस्कृत के करीब नहीं है जो संस्कृत के करीब नहीं है वो फिर अध्यात्म के करीब नहीं हो सकता और जो अध्यात्म के करीब नहीं है वो दुःख बहुत पाएगा।

संस्कृत भाषा की प्राचीनता और आधुनिक उपयोगिता

संस्कृत भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित भाषाओं में से एक है जिसका इतिहास हजारों साल पुराना है। इसकी उत्पत्ति वैदिक काल में हुई जब ऋग्वेद जैसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथों की रचना की गई। वैदिक संस्कृत को विश्व की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक माना जाता है और यह भाषा उस समय के लोगों की धार्मिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा थी और है। शास्त्रीय संस्कृत जिसे पाणिनि के अष्टाध्यायी द्वारा

व्यवस्थित किया गया। यह भाषा के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इसने न केवल धार्मिक और साहित्यिक रचनाओं के लिए एक मानक रूप तैयार किया बल्कि विज्ञान, खगोलशास्त्र, गणित, चिकित्सा और दर्शन जैसे क्षेत्रों में भी इसके व्यापक उपयोग की नींव रखी।

संस्कृत की प्राचीनता केवल इसकी भाषा संरचना और साहित्यिक रचनाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मूल में गहराई से जुड़ी हुई है। महाभारत, रामायण, वेद, उपनिषद और पुराण जैसे महाकाव्य और ग्रंथ संस्कृत में ही लिखे गए हैं जो आज भी विश्व भर में अध्ययन और अनुसंधान के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। संस्कृत की व्याकरणिक और संरचनात्मक शुद्धता इसे अन्य भाषाओं से अलग और विशेष बनाती है जिससे इसे 'देवभाषा' कहा जाता है।

आधुनिक युग में संस्कृत की उपयोगिता कई रूपों में देखने को मिलती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संस्कृत की संरचना को कंप्यूटर विज्ञान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विकास में सहायक माना जा रहा है। संस्कृत में लिखे गए प्राचीन ग्रंथों में विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र और चिकित्सा के क्षेत्र में जो ज्ञान है वह आज भी प्रासंगिक है और आधुनिक अनुसंधान के लिए प्रेरणा स्रोत बन रहा है। इसके अलावा योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन के अध्ययन में संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है जो आज वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय हो रहे हैं।

संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार भी विभिन्न शैक्षणिक और सांस्कृतिक प्रयासों के माध्यम से हो रहा है। भारत और अन्य देशों में संस्कृत के पाठ्यक्रमों की संख्या में वृद्धि हो रही है और डिजिटल प्लेटफार्मों पर संस्कृत साहित्य का डिजिटलीकरण हो रहा है। इस प्रकार संस्कृत भाषा न केवल अपने प्राचीन गौरव के लिए जानी जाती है बल्कि आधुनिक युग में भी इसकी उपयोगिता और महत्व बनाए हुए है।

प्राक्कल्पना: राजनीति विज्ञान और भूगोल जैसे विषयों पर शोध की संख्या की तुलना में कुछ संस्कृतप्रेमी संगठन संस्कृत भाषा के प्रचार में असाधारण योगदान दे रहे हैं। संस्कृत शिक्षा के लिए बीएचयू, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, एसएलबीएसएनएसयू, सीएसयू, एनएसयू आदि जैसे प्रसिद्ध संस्कृत संस्थान कई महत्वपूर्ण शाखाएँ हैं जो संस्कृत का अध्ययन आज भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण बनाती हैं। इन शाखाओं में आधुनिकता और व्यापक शोध के लिए विशेष रूप से अन्वेषण और अनुसंधान की काफी संभावनाएँ हैं। ये शाखाएँ नए विचारों की खोज करने और गहराई से जाने के अवसर प्रदान करती हैं।

सौंदर्यशास्त्र

संस्कृत सौंदर्यशास्त्र साहित्य का एक अभिन्न अंग है जो प्राचीन भारत में 3500 वर्षों पहले उत्पन्न हुआ है। संस्कृत सौंदर्यशास्त्र कला, साहित्य और प्रदर्शन की सुंदरता और सामंजस्य पर जोर देता है और इसमें शामिल हैं रस, भावनात्मक स्वाद, ध्वनि, विचारोत्तेजकता और अलंकार, अलंकरण जैसी अवधारणाएँ। एस्थेटिशियन ने दर्शकों की व्यस्तता, रूप और सामग्री के बीच कलाकार की भूमिका और रिश्ते के महत्व पर भी चर्चा की। इन विचारों ने न केवल भारतीय कला और साहित्य को प्रभावित किया बल्कि अन्य सांस्कृतिक पूरे एशिया में परंपराएँ भी प्रभावित की। संस्कृत सौंदर्यशास्त्र का अध्ययन भारतीय संस्कृति विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है।

भाषाविज्ञान

संस्कृत भाषाविज्ञान संस्कृत के व्याकरण, स्वर विज्ञान और शब्दावली का अध्ययन करता है जो भारत की सबसे पुरानी और सबसे शास्त्रीय भाषाओं में से एक है। भाषा और समय के साथ इसका विकास संस्कृत की जटिलताओं को समझने पर केंद्रित है संस्कृत भाषाविज्ञान भी अन्य इंडो-यूरोपीय भाषाओं और क्षेत्र की अन्य भाषाओं पर इसका प्रभाव के बीच संबंधों की जांच करता है।

कानून और प्रशासन: कानून और प्रशासन को संस्कृत साहित्य में बड़े पैमाने पर प्रलेखित किया गया था। विशेष रूप से प्राचीन भारत में। कानून शासन और प्रशासन के बारे में विस्तृत जानकारी मनुस्मृति, अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र जैसे ग्रंथ में शामिल हैं। ये ग्रंथ प्राचीन भारत की राजनीतिक व्यवस्था जिसमें आपराधिक और नागरिक कानून न्याय प्रशासन और राजनीतिक शामिल हैं को कानूनी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। शासकों के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों कानून को बनाए रखने के महत्व और आदेश और न्याय बनाए रखने में न्यायपालिका की भूमिका इन प्राचीन संस्कृत कार्यों का अध्ययन जारी है।

खगोल विज्ञान: खगोल विज्ञान प्राचीन भारत में अध्ययन का एक प्रमुख क्षेत्र था और 1995 में बड़े पैमाने पर प्रलेखित किया गया था। संस्कृत साहित्य वेद ज्योतिष शास्त्र खगोलीय टिप्पणियों गणनाओं पर व्यापक जानकारी और सूर्य सिद्धांत ग्रहण जैसी घटनाएं खगोलीय पिंडों की गति और ब्रह्मांड का निर्माण और विनाश जैसे संस्कृत कार्यों का ये ग्रंथ खगोलीय वर्णन करते हैं। संस्कृत खगोल विज्ञान इस क्षेत्र में खगोल विज्ञान के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसमें भारत से खगोलीय ज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

योग: योग की जड़ें संस्कृत साहित्य में हैं। उपनिषदों में सबसे पहले संदर्भ दिखाई देते हैं। वही योग पर सबसे व्यापक पाठ भगवद गीता है जो राजकुमार अर्जुन और भगवान कृष्ण के बीच कर्म कर्तव्य और आध्यात्मिक मुक्ति की प्रकृति पर एक संवाद प्रस्तुत करता है। पतंजलि का योगसूत्र एक और है जो योग के आठ गुना मार्ग को रेखांकित करता है जिसमें शारीरिक मुद्राएं सांस नियंत्रण और ध्यान शामिल हैं।

आयुर्वेद: आयुर्वेद संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद के साथ चिकित्सा की एक प्राचीन प्रणाली है। यह माना जाता है दुनिया में स्वास्थ्य सेवा के सबसे पुराने रूपों में से एक और इस विश्वास पर आधारित है कि मन शरीर और आत्मा के बीच एक नाजुक संतुलन पर स्वास्थ्य और कल्याण निर्भर करता है। आयुर्वेद का मूलभूत पाठ चरक संहिता शरीर रचना विज्ञान शरीर विज्ञान निदान और विभिन्न के उपचार पर व्यापक जानकारी प्रदान करती है। एक अन्य महत्वपूर्ण पाठ सुश्रुत संहिता सर्जिकल तकनीकों और हर्बल के उपयोग पर केंद्रित है।

दर्शन: दर्शन प्राचीन भारत में जांच का एक प्रमुख क्षेत्र था और इसके सिद्धांत और संस्कृत साहित्य में प्रथाओं को बड़े पैमाने पर प्रलेखित किया गया था। उपनिषदों जैसी संस्कृत रचनाएं भगवद गीता और वेदांत सूत्र में विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला पर दार्शनिक चर्चा शामिल हैं जिनमें वास्तविकता आत्म नैतिकता और आध्यात्मिकता की प्रकृति शामिल हैं। ये ग्रंथ व्यक्ति और ब्रह्मांड कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा और मुक्ति और ज्ञान का मार्ग के बीच संबंधों का भी पता लगाते हैं। संस्कृत दर्शन का भारत में दार्शनिक विचारों के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसके विचारों का अध्ययन और चर्चा आज भी जारी है।

नैतिकता कई ग्रंथों के साथ संस्कृत साहित्य में नैतिकता पुण्य व्यवहार के महत्व और कार्यों के परिणामों को संबोधित करना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए महाभारत राजा जनक और ऋषि याज्ञवल्क्य के बीच स्वयं की प्रकृति पर चेतना और नैतिकता का प्रसिद्ध संवाद शामिल है। भगवद गीता धर्म की अवधारणा या सही कार्यवाई और पूरा करने में इसके महत्व पर चर्चा करती है। संस्कृत साहित्य नैतिक और नैतिक दुविधाओं को भी संबोधित करता है जैसे कि रामायण में धार्मिकता और अधर्म के बीच संघर्ष। ये ग्रंथ प्रासंगिक बने हुए हैं आज भारत और दुनिया भर में नैतिक और नैतिक मूल्यों को आकार देना जारी है।

संस्कृत भाषा और साहित्य का अध्ययन किसके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत के संरक्षण के साथ-साथ आधुनिक भाषाविज्ञान के विकास के लिए और तुलनात्मक भाषाशास्त्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में और अतीत से जुड़ाव में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। निरंतर समर्थन और संसाधनों के साथ संस्कृत का अध्ययन फलता-फूलता रह सकता है और भावी पीढ़ियों के लिए भारत की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित कर सकता है।

संस्कृत भाषा की वैश्विक स्वीकार्यता

संस्कृत भाषा की वैश्विक स्वीकार्यता प्राचीन काल से ही विद्वानों और संस्कृतियों के बीच व्यापक रही है। यह भाषा अपने साहित्यिक, धार्मिक और वैज्ञानिक ग्रंथों के कारण विश्वभर में अध्ययन और अनुसंधान का केंद्र बनी हुई है। संस्कृत के महान ग्रंथ जैसे वेद, उपनिषद, महाभारत और रामायण न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी गहन अध्ययन का विषय हैं। पश्चिमी विद्वानों जैसे मैक्स मूलर और विलियम जोन्स ने संस्कृत के ग्रंथों का अनुवाद कर इसे पश्चिमी दुनिया में लोकप्रिय बनाया। आज संस्कृत का अध्ययन न केवल भारत में बल्कि यूरोप, अमेरिका, रूस और जापान जैसी जगहों पर भी हो रहा है। इसके अलावा संस्कृत भाषा को कंप्यूटर विज्ञान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और भाषाई अध्ययन में भी संभावित रूप से उपयोगी माना जा रहा है क्योंकि इसकी व्याकरणिक संरचना बेहद सटीक और वैज्ञानिक है। डिजिटल प्लेटफार्मों पर संस्कृत साहित्य का डिजिटलीकरण हो रहा है जिससे यह भाषा और अधिक लोगों तक पहुंच रही है। इस प्रकार संस्कृत भाषा अपनी प्राचीनता के साथ-साथ आधुनिक युग में भी वैश्विक स्तर पर स्वीकार्यता प्राप्त कर रही है।

संस्कृत की साहित्यिक और भाषाई विरासत का संरक्षण

संस्कृत की साहित्यिक और भाषाई विरासत का संरक्षण भारतीय संस्कृति और ज्ञान की धरोहर को संरक्षित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्राचीन ग्रंथों जैसे वेद, उपनिषद, महाकाव्य और शास्त्र में निहित ज्ञान और साहित्यिक उत्कृष्टता को बनाए रखने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। इन ग्रंथों की पांडुलिपियों का संरक्षण और डिजिटलीकरण एक प्रमुख कदम है जो उन्हें भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुलभ बनाता है। भारत और विश्व के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में संस्कृत की शिक्षा को बढ़ावा देने, शोध और अनुवाद कार्यों के माध्यम से इस भाषा की समृद्ध धरोहर को जीवंत रखा जा रहा है। इसके अलावा संस्कृत के शास्त्रीय साहित्य का आधुनिक भाषाओं में अनुवाद और व्याख्या इसे अधिक व्यापक दर्शकों तक पहुंचाने में सहायक है। संस्कृत भाषा के पुनरुद्धार के लिए आयोजित सम्मेलन, कार्यशालाएं और ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी इस धरोहर के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन प्रयासों से संस्कृत की साहित्यिक और भाषाई विरासत न केवल संरक्षित हो रही है बल्कि समकालीन समाज में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए रख रही है।

भविष्य में संस्कृत की संभावनाएँ

भविष्य में संस्कृत की संभावनाएँ अत्यंत उत्साहजनक हैं विशेष रूप से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्रों में। संस्कृत की वैज्ञानिक व्याकरणिक संरचना और इसकी प्राचीनता इसे कंप्यूटर विज्ञान, विशेष रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण में एक संभावित भाषा के रूप में प्रस्तुत करती है। वैश्विक स्तर पर योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन की बढ़ती लोकप्रियता के साथ संस्कृत का अध्ययन और शोध न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी बढ़ रहा है। डिजिटल युग में संस्कृत साहित्य का डिजिटलीकरण और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से इसे व्यापक दर्शकों तक पहुंचाने के प्रयास जारी हैं जिससे यह भाषा अधिक सुलभ और प्रासंगिक बन रही है। साथ ही संस्कृत में नए शोध और अनुवाद कार्यों के द्वारा इसे आधुनिक संदर्भों में पुनः प्रस्तुत किया जा रहा है। संस्कृत के पुनरुद्धार के लिए शैक्षणिक कार्यक्रम, शोध संस्थान और सांस्कृतिक प्रयास इस भाषा को एक समकालीन और जीवंत भाषा के रूप में पुनः स्थापित करने में सहायक होंगे। इस प्रकार संस्कृत न केवल अतीत की धरोहर बनी रहेगी बल्कि भविष्य में भी ज्ञान, विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

निष्कर्ष

संस्कृत भाषा आधुनिक युग में भी अप्रासंगिक नहीं, अत्यंत आवश्यक है। यह भाषा भारत की आध्यात्मिक चेतना, वैज्ञानिक परंपरा और सांस्कृतिक एकता की आधारशिला है। आधुनिक तकनीक, शैक्षणिक और वैश्विक संदर्भों में

संस्कृत की भूमिका पुनः परिभाषित की जा रही है। आवश्यकता केवल दृष्टिकोण बदलने की है। संस्कृत को केवल अतीत की भाषा न मानकर भविष्य की भाषा के रूप में स्वीकार करना होगा। संस्कृत में निहित ज्ञान, विज्ञान, नैतिकता और आध्यात्मिकता के सिद्धांत मानवता के समग्र विकास के लिए आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वे सहस्रों वर्ष पूर्व थे। इस प्रकार आधुनिक युग में संस्कृत भाषा न केवल सांस्कृतिक धरोहर की संरक्षक है बल्कि एक जीवंत वैज्ञानिक और वैश्विक संवाद की भाषा भी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- 1^० देवकुमार। दास संस्कृत साहित्य इतिहास कोलकाता श्री बलराम प्रकाशनी 2012^०
- 2^० वाचस्पति गैरेला कौटिल्य अर्थशास्त्र। वाराणसी: चौखंभा विद्याभवन 1984।
- 3^० राधावल्लभ त्रिमूर्ति संस्कृत संहिता का समग्र इतिहास। वाराणसी: चौखंभा सुरभारती प्रकाशन 2017।
- 4^० एएल बाशम द वंडर दैट वाज़ इंडिया: ए सर्वे ऑफ़ द कल्चर ऑफ़ द कल्चर मुसलमानों के आने से पहले भारतीय उपमहाद्वीप। लंदन: सिडगविक और जैक्सन 1954^०
- 5^० उमाशंकर शर्मा संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखंभा भारती प्रकाशन 2017^०
- 6^० विद्याधर शर्मा गुलेरी संस्कृत में विज्ञान नई दिल्ली। संस्कृत भारती 2000^०
- 7^० बलदेव उपाध्याय भारतीय दरसना वाराणसी: चौखंभा ओरिएंटलिया 1976^०
- 8^० अनंत राम शर्मा, एडव. सुश्रुत। सुश्रुतसंहिता वाराणसी: चौखंभा सुरभारती प्रकाशन 2017।
- 9^० रामचन्द्र पांडे सूर्यसिद्धान्त वाराणसी: चौखंभा सुरभारती प्रकाशन 1999।